**JAIN REFERENCE LIBRARY**
**ACHARYA SURENDRASURISHWARJI JAIN TATVA GYANSHALA**
**12, SHREYANSNATH SOCIETY, B/H DHARNIDHAR TEMPLE,**
**GODAVARI ROAD, VASANA, AHMEDABAD-7**

**872 872_Search_Results_For_jiv**

(1) (संत) जीवा, (2) 14 गुणस्थानक एटले जीवनो विकासक्रम , (3) अंडज जीव, (4) अंतरंग करणी अथवा जीव ने करणीनो संवाद , (5) अकर्म जीव की ऊर्ध्व गति होने के हेतुओं का प्ररूपण, (6) अग्निजीव, (7) अग्निजीवों की बहुलता क्यों ?, (8) अङ्गारजीविका, (9) अजीव, (10) अजीव अधिकरण के भेद, (11) अजीव क्रिया, (12) अजीव तत्त्व के 13 भेद, (13) अजीव तत्त्व के भेद 13 या 14 ?, (14) अजीव द्रव्यकरण-भावकरण , (15) अजीव द्रव्यलेश्या , (16) अजीव नाममंगल, (17) अजीव भावकरण , (18) अजीव भेद 14, (19) अजीव संयम, (20) अजीवः, (21) अजीवअज्ञपनिका क्रिया, (22) अजीवअपच्चक्खाणकिरिया, (23) अजीवअप्रत्याख्यान क्रिया, (24) अजीवआरम्भिकी क्रिया, (25) अजीवकरण, (26) अजीवकरणं, (27) अजीवकाय, (28) अजीवकायासंयम, (29) अजीवकिरिया, (30) अजीवक्रिया, (31) अजीवणेसत्थिया, (32) अजीवदृष्टिजा क्रिया, (33) अजीवना 5 संस्थान अने जीवना 6 संस्थान , (34) अजीवनिश्रित स्वर सात है--, (35) अजीवनैसृष्टिकी, (36) अजीवनैसृष्टिकी क्रिया, (37) अजीवपाउसिया, (38) अजीवपाओगिअं, (39) अजीवपारिग्गहिया, (40) अजीवपारिग्रहिकी क्रिया, (41) अजीवप्रातीत्यिती क्रिया, (42) अजीवप्रादोषिकी क्रिया, (43) अजीवबन्ध, (44) अजीवभावप्रयोगबंध : औदारिक शरीर आदि , (45) अजीवमिश्रिता, (46) अजीवमिस्सिया, (47) अजीवमीसए, (48) अजीवमीसग, (49) अजीवमीसिया, (50) अजीवविचय, (51) अजीवविचय धर्मध्यान, (52) अजीववेयारणिया, (53) अजीववैदारणिका क्रिया, (54) अजीवशरण, (55) अजीवसंयम, (56) अजीवसामंतोवणिवाइया, (57) अजीवसामन्तोपनिपातिकी क्रिया, (58) अजीवसाहत्थिया, (59) अजीवस्पर्शनक्रिया, (60) अजीवस्पृष्टिजा क्रिया, (61) अजीवस्वाहस्तिकी क्रिया, (62) अजीवाधिकरण, (63) अजीवाप्रत्याख्यानक्रिया, (64) अजीवारंभिया, (65) अजीवोदय-निष्पन्न , (66) अजीवोदयनिष्पन्न, (67) अणंतजीविया, (68) अणाजीवी, (69) अणुजीवंति, (70) अण्डज आदि जीवों की गति-आगति का प्ररूपण, (71) अण्डवणिक निन्नक का जीवन और उसकी नरक में उत्पत्ति, (72) अतिशयों की उपजीविता : आर्यसमुद्र-मंगु दृष्टांत , (73) अधोलोक के एक आकाश प्रदेश में जीव, अजीव और उनके देश प्रदेश, (74) अनन्तजीव, (75) अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, (76) अनन्तरावगाढ़ादि कृष्णलेश्यी एकेन्द्रिय जीवों के भेद-प्रभेदों का प्ररुपण, (77) अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय जीवों में कर्मप्रकृतियों के स्वामित्व, बंध और वेदन का प्ररूपण, (78) अनादि मिथ्यादृष्टि जीव सर्वप्रथमवार कयुं सम्यक्त्व प्राप्त करे ?, लेखक - कुमुदचन्द्र-गोयमचन्द्रविजय, (79) अनिन्द्रिय जीव, (80) अनिवृत्तिबादर जीवस्थान, (81) अनुजीवी, (82) अनुपजीवकः, (83) अनोजीविका, (84) अपकायिक जीवों का आरम्भ न करने की प्रतिज्ञा , (85) अपकायिक जीवों की हिंसा का निषेध , (86) अप्कायिक जीव, (87) अप्कायिक जीवों के स्थान, (88) अप्जीव, (89) अप्रमत्तसंयत जीवस्थान, (90) अभव्य जीव वधुमां वधु केटलुं ज्ञान प्राप्त करी शके ?, पत्रचर्चा - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय, (91) अभव्य जीव वधुमां वधु केटलुं ज्ञान प्राप्त करी शके ?, लेखक - शीलचन्द्र-चन्द्रयशविजय, (92) अभ्ररुहादि के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (93) अमंडलिउवजीवो, (94) अमंडली उपजीवी , (95) अयोगिकेवली जीवस्थान, (96) अरसजीवी, (97) अर्जुनजीवराज, (98) अलसी कुसुम्ब आदि के मूल कंदादि जीवों के उत्पातादि का प्ररूपण, (99) अलोक के एक आकाश प्रदेश में जीवादि नहीं है, (100) अल्प-बहु आयु की अपेक्षा अंधकवह्नि जीवों की सम संख्या का प्ररूपण, (101) अल्पमहाकर्मादि युक्त जीव के बंधादि पुद्गलों का परिणमन, (102) अवक्रगामी जीवोना गुणो, लेखक - विमलचन्द्रसागर, (103) अविरत जीवने ईरियावही, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय, (104) अविरतसम्यग्दृष्टि जीवस्थान, (105) अशस्त्र परिणति जीव युक्त पुराने आहार के ग्रहण का निषेध , (106) असंख्य वर्ष आयुष्य वाले जीव, (107) असंख्येय जीव, (108) असंज्ञी जीवों के अकामनिकरण वेदना का प्ररूपण, (109) असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में आठ कर्म-प्रकृतियों की स्थिति बंध का प्ररूपण, (110) असंयतादि जीव के पापकर्म बंध का प्ररूपण, (111) असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, (112) असंहरणीय जीव, (113) असांव्यवहारिक जीव, (114) अस्थिक आदि के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (115) आकाश में जीव की या पुद्गल की गति, (116) आगमद्रव्यजीव, (117) आगमभावजीव, (118) आजीव, (119) आजीव दोष, (120) आजीवक, (121) आजीवक चारित्रकुशील, (122) आजीवकुशील, (123) आजीवग, (124) आजीवगदिट्ठंतो, (125) आजीवगा, (126) आजीवणपिंडो, (127) आजीवदोषदुष्टा वसति, (128) आजीवन, (129) आजीवना दोष, (130) आजीवपिण्ड, (131) आजीवभय, (132) आजीवभयं, (133) आजीववत्तिया, (134) आजीववृत्तिता, (135) आजीविक, (136) आजीविक तीर्थंकर गोशालक का कथानक, (137) आजीविक स्थविरों ने " अयंपुल " को आजीविक उपासक रूप में स्थिर किया अयंपुल अजीविकोपासक हो गया, (138) आजीविकश्रुत, (139) आजीविका हेतु, (140) आजीविकापिण्ड, (141) आजीविकाभय, (142) आजीविग, (143) आजीविय, (144) आजीवियसुत्त, (145) आजीवियसुत्तपरिवाडीए, (146) आजीविया, (147) आजीवी, (148) आठ सूक्ष्म जीवों की हिंसा का निषेध , (149) आय-कायादि के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (150) आयुकर्म के बंधक-अबंधक

आदि जीवों के अल्पबहुत्व का प्ररूपण, (151) आयुष्य के अपवर्तन मे जीव का अनुभव, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (152) आरंभजीविन् , (153) आराधना, जीवविचार बालावबोध, (154) आलू मूलगादि के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (155) इंन्द्रियवशार्त जीवों के कर्मबंधादि का प्ररूपण, (156) इक्षु-इक्षुवाटिका आदि के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (157) उज्जीवाविया, (158) उज्जीवितेवाशीर्वाद, (159) उत्पल पत्र में एक-अनेक जीव विचार, (160) उदीर्ण-उपशांत मोहनीय कर्म वाले जीव के उपस्थापनादि का प्ररूपण, (161) उपजीवकः, (162) उपजीवकत्वम्, (163) उपजीवी, (164) उपजीव्य, (165) उपजीव्योपजीवकभावसंगतिः, (166) उपदेश रसाल जीवाभिगमसूत्र बाला. , (167) उरपरिसर्प जीवों का वर्ग, (168) उर्ध्वलोक क्षेत्रलोक के एक आकाश प्रदेश में जीव तथा अजीव के देश और प्रदेशों का प्ररूपण, (169) उर्ध्वलोक क्षेत्रलोक में जीव तथा अजीव के देशों और प्रदेशों का प्ररूपण, (170) उवजीवइ, (171) उवजीवति, (172) उवजीविओ, (173) उवसंतजीवी, (174) एक जीव को एक साथ कितने ज्ञान ?, (175) एक जीव को एक साथ संभवित परीषह, (176) एक जीवने एक समये एक ज योग बंधहेतु ?, जिज्ञासा - दिव्यचन्द्रविजय, (177) एकजीवक, (178) एकत्व-बहुत्व की विवक्षा से सब जीवों का मातादि के रूप में अनन्त बार पूर्वोत्पन्नत्व का प्ररूपण, (179) एकेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा , (180) एकेन्द्रिय जीवों में आठ कर्मप्रकृतियों की स्थिति बंध का प्ररूपण, (181) एकेन्द्रिय जीवों में कर्मप्रकृतियों के स्वामित्व, बंध और वेदन का प्ररूपण, (182) एकेन्द्रिय जीवों में वेदनानुभव का प्ररूपण, (183) एकेन्द्रिय जीवों में स्यात् लेश्यादि बारह द्वारों का प्ररुपण, (184) एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय पर्यन्त तिर्यंच जीवों के वध के कारण, (185) ओघजीवितं, (186) ओहजीव, (187) औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध, (188) कर्म विशोधि की अपेक्षा चौदह जीव स्थानों ( गुण स्थानों ) के नाम, (189) कर्मानुभाव से जीव के कुरुपत्व-सुरुपत्व आदि का प्ररूपण, (190) कल मसूर आदि के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (191) कलंतराजीवअ, (192) काचा गोरसयुक्त कठोळमां निगोद अने पंचेन्द्रिय जीवोनी उत्पत्ति !, लेखक - तीर्थतिलकविजय, (193) काल : जीव-अजीव का पर्याय , (194) कालोद और पुष्करवरद्वीपार्ध के जीवों की एक-दुसरे में उत्पत्ति, (195) किण्ह बंधुजीवग, (196) किस गति से निकले हुए जीव एक समय में उत्कृष्टः कितने सिद्ध होते है ?, (197) किस जीव के कितने शरीर ?, (198) किस जीव को कितने भाव, (199) किस जीव को कितने वेद ?, (200) किस जीव को कौन-सी योनि ?, (201) किस जीव में कितनी पर्याप्तियां ?, (202) किस संघयण वाले जीव किस नरक तक उत्पन्न होते है ?, (203) कुलोपजीवी चारित्रकुशील, (204) कृष्ण बंधुजीवक, (205) कृष्णलेश्यी भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीवों के भेद-प्रभेदों का प्ररुपण, (206) केवली जीविताशंसा से मुक्त , (207) केशिकुमार निर्दिष्ट " जीव की अदृश्यता ", (208) केशिकुमार श्रमण के वक्तव्य में " जीव की अप्रतिहत गति का समर्थन ", (209) केशिकुमार श्रमण के वक्तव्य में - " काष्ठगत अग्नि के दृष्टान्त से जीव का अदर्शन ", (210) केशिकुमार श्रमण के वक्तव्य में - " जीव और शरीर के अन्यत्व समर्थन में अपर्याप्त उपकरण हेतु का निरूपण ", (211) केशिकुमार श्रमण के वक्तव्य में - " जीव का अगुरुलघुत्व ", (212) केशिकुमार श्रमण के वक्तव्य में जीव और शरीर का अन्यत्व प्ररूपण " आजकाल में उत्पन्न नैरयिक का मनुष्यलोक आगमन विषयक निषेध-प्ररूपक चार निर्देश ", (213) केशिकुमार श्रमण निर्दिष्ट - " जीव प्रदेशों की शरीर प्रमाण अवस्थिति ", (214) केशिकुमार श्रमण निर्दिष्ट - " प्रदेशी राजा का व्यावहारिक जीवन ", (215) कौन-से संघयणवाला जीव किस देवलोक या नरक तक जा सकता है (कोष्टक), (216) क्रियावादी आदि चारों समवसरणगत जीवों में ग्यारह स्थानों द्वारा आयु बंध का प्ररूपण, (217) क्रियावादी आदि जीव-चौबीसदंडकों में भव-सिद्धिकत्व और अभवसिद्धिकत्व की प्ररूपणा, (218) क्रोधादिकषायवशार्त जीवों के कर्मबंधादि का प्ररूपण, (219) क्षेत्रत : जीव, (220) खेचर जीवनी उत्कृष्टथी धनुष्पृथकत्वनी अवगाहना, जिज्ञासा - राजहेमविजय, (221) खेचर जीवनी उत्कृष्टथी धनुष्पृथकत्वनी अवगाहना, समाधान - श्रुतांगचन्द्रविजय, (222) खेचर जीवों का वर्ग, (223) गौशालक के जीव की देवलोक में उत्पत्ति, (224) गौशालक जीव के दृढ़प्रतिज्ञ भव से सिद्धगति का निरूपण, (225) गौशालक जीव विमलवाहन के अनेक दुःख प्रचुर भव और बाद में देव भव, (226) चतुरशरीरी जीव, (227) चतुरिन्द्रिय जीव, (228) चतुरिन्द्रिय जीवों के स्थान, (229) चतुरिन्द्रिय जीवों में आठ कर्मप्रकृतियों की स्थिति बंध का प्ररूपण, (230) चरमाचरम की अपेक्षा जीव-चौबीसदंडकों में महाकर्मत्वादि का प्ररूपण, (231) चातुर्गतिक जीवों की सान्तर-निरन्तर उत्पत्ति का प्ररूपण, (232) चार प्रकार से जीव की प्ररूपणा की, (233) चौबीसदंडकों के जीव कहाँ से आकर उत्पन्न होते हैं इसका प्ररूपण, (234) चौबीसदंडकों के जीवों का उद्वर्तनानंतर उत्पाद का प्ररूपण, (235) चौरासी लाख जीवयोनि विनती, (236) छः जीवनिकाय की हिंसा का परिणाम , (237) छः काय जीवोनी समज...( त्रसकाय ) ( 3 विकलेन्द्रिय + तिर्यंच पंचेन्द्रिय ) , (238) छः काय जीवोनी समज...( मनुष्य-देव-नारकी ) , (239) छः काय जीवोनी समज...( स्थावरकाय ) , (240) छज्जीवणिया, (241) छह जीवनिकाय , (242) छह जीवनिकायो का आरम्भ न करने की प्रतिज्ञा , (243) छह जीवनिकायो की हिंसा नहीं करनी चाहिए , (244) जगजीवन, (245) जगजीवन - १, (246) जगजीवन - २, (247) जगजीवन - ३, (248) जगजीवन - ४, (249) जगजीवन दयाल मोदी, (250) जम्बूद्वीप के जीवों की लवणसमुद्र में उत्पत्ति, (251) जम्बूद्वीप में सब जीवों का एकेन्द्रिय रूप से पूर्व में उत्पन्न होना, (252) जरायुज जीव, (253) जलचर जीवों का वर्ग, (254) जाजीवा, (255) जाति उपजीवी चारित्रकुशील, (256) जामिनी-जीवन, (257) जावजिव, (258) जावजीव, (259) जिवन्तक, (260) जिवलूहरि, (261) जिवारइं, (262) जीव, (263) जीव अदत्त, (264) जीव अधिकरण के 108 भेद, (265) जीव अस्तिकाय, (266) जीव उत्पत्ति नी सज्झाय ( या ) ( तंदुल वेयाली सूत्र सज्झाय या गर्भावास सज्झाय या वैराग्य सज्झाय ), (267) जीव और चौबीसदंडकों में आठ कर्म-प्रकृतियों का किस प्रकार बंध होता है, (268) जीव और पुद्गल के प्रदेश का संकोच-विकास, (269) जीव और पुद्गलों का लोक से बाहर गमन अशक्य, (270) जीव कर्मपुद्गलो कों सर्वदिशाओं से ग्रहण करता है या एक दिशा से

?, (271) जीव का परिमाण , (272) जीव का लक्षण, (273) जीव का स्वरूप , (274) जीव की अपेक्षा , (275) जीव की न्यूनतम अवगाहना अंगुल का असंख्यातवां भाग होने का क्या कारण है ?, (276) जीव की विविधता का हेतु : कर्म , (277) जीव के चौदह प्रकार , (278) जीव के प्रकार --, (279) जीव के भाव, (280) जीव के लक्षण , (281) जीव क्रिया, (282) जीव खूतवो, (283) जीव भेद 14, (284) जीव में भाव और कर्मबंध , (285) जीव में श्रुत की भजना , (286) जीव राशि, (287) जीव विपाकी, (288) जीव संयम, (289) जीव समास, (290) जीव-अजीव संयम , (291) जीव-अजीवमय लोक, (292) जीव-उत्तरप्रयोगकरण, (293) जीव-चौबीसदंडकों में अठारह पाप स्थानों द्वारा क्रियाओं का प्ररूपण, (294) जीव-चौबीसदंडकों में अन्त :क्रिया के भावाभाव का प्ररूपण, (295) जीव-चौबीसदंडकों में अष्ट कर्मप्रकृतियों के बंध स्थानों का प्ररूपण, (296) जीव-चौबीसदंडकों में अष्टकर्मो का भाव बंध प्ररूपण, (297) जीव-चौबीसदंडकों में आठ कर्म बाँधने पर क्रियाओं का प्ररूपण, (298) जीव-चौबीसदंडकों में आठ कर्मप्रकृतियों के अविभाग परिच्छेद और आवेष्टन-परिवेष्टन, (299) जीव-चौबीसदंडकों में आठ कर्मो के चयादि का प्ररूपण, (300) जीव-चौबीसदंडकों में आत्मकृत दु:ख के वेदन का प्ररूपण, (301) जीव-चौबीसदंडकों में आभोग-अनाभोग निर्वर्तित आयु का प्ररूपण, (302) जीव-चौबीसदंडकों में आयु कर्म का कार्य, (303) जीव-चौबीसदंडकों में आयु के वेदन का प्ररुपण, (304) जीव-चौबीसदंडकों में आयु बंध का काल प्ररूपण, (305) जीव-चौबीसदंडकों में आयु बंध के आकर्ष, (306) जीव-चौबीसदंडकों में आरंभिकी आदि क्रियाओं की नियमा-भजना, (307) जीव-चौबीसदंडकों में एक व अनेक जीव की अपेक्षा क्रियाओं का प्ररूपण, (308) जीव-चौबीसदंडकों में एक-अनेक की अपेक्षा स्वयंकृत आयु वेदन का प्ररूपण, (309) जीव-चौबीसदंडकों में कर्कश-अकर्कश कर्म बंध के हेतु , (310) जीव-चौबीसदंडकों में कांक्षामोहनीय कर्म का कृत आदि त्रिकालत्व का निरुपण, (311) जीव-चौबीसदंडकों में कायिकादि पाँच क्रियाओं का परस्पर सहभाव, (312) जीव-चौबीसदंडकों में कितनी कर्म प्रकृति के वेदन का प्ररूपण, (313) जीव-चौबीसदंडकों में कृत पापकर्मो का नानात्व, (314) जीव-चौबीसदंडकों में क्रियाओं द्वारा कर्मप्रकृतियों का बंध, (315) जीव-चौबीसदंडकों में क्रोधादि चार स्थानों द्वारा आठ कर्मो का चयादि प्ररूपण, (316) जीव-चौबीसदंडकों में चैतन्यकृत कर्मो का प्ररूपण, (317) जीव-चौबीसदंडकों में जरा-शोक वेदन का प्ररूपण, (318) जीव-चौबीसदंडकों में जातिनामनिधत्तादि का प्ररूपण, (319) जीव-चौबीसदंडकों में जीवादिकों की अपेक्षा प्राणातिपातिकी आदि क्रियाओं का प्ररूपण, (320) जीव-चौबीसदंडकों में ज्ञानावरणीय आदि कर्म बाँधते हुए को कितनी कर्मप्रकृतियों का बंध, (321) जीव-चौबीसदंडकों में निद्रा और प्रचलावालों के कर्मप्रकृतियों का बंध, (322) जीव-चौबीसदंडकों में पाँच शरीरों की अपेक्षा क्रियाओं का प्ररूपण, (323) जीव-चौबीसदंडकों में पापकर्म और अष्टकर्मो का सम-विषम प्रवर्तन-समापन, (324) जीव-चौबीसदंडकों में पापकर्म और अष्टकर्मो के किये थे आदि भंग, (325) जीव-चौबीसदंडकों में संयतादि का और अल्पबहुत्व का प्ररूपण, (326) जीव-चौबीसदंडकों में साता-असातावेदनीय कर्म बंध के हेतु , (327) जीव-चौबीसदंडकों में सोपक्रम-निरूपक्रम आयु का प्ररूपण, (328) जीव-चौबीसदंडकों में स्वयंकृत दु:ख वेदन का प्ररूपण, (329) जीव-चौबीसदंडकों में हास्य और उत्सुकता वालों के कर्मप्रकृतियों का बंध, (330) जीव-चौबीसदण्डकों और सिद्धों में संयतादि का प्ररूपण, (331) जीव-चौबीसदण्डकों में पापकर्म और अष्टकर्मो का समर्जन-समाचरण, (332) जीव-पुद्गलबन्ध, (333) जीव-पुद्गलयुति, (334) जीव-योनि 84 लाख (प्रवचन सारोद्धार द्वार 151), (335) जीव-समास, (336) जीव-स्थान, (337) जीवंधर, (338) जीवंजीव, (339) जीवंतसामि, (340) जीवंधर, (341) जीवंधर चंपू, (342) जीवंधर चरित , (343) जीवंधर चरित्र, (344) जीवंधर प्रबन्ध, (345) जीवंधरब्रह्म (दिगम्बर), (346) जीवंधररास, (347) जीवंधरस्वामीगीत, (348) जीवंधरस्वामीरास, (349) जीव:, (350) जीवक, (351) जीवकाया गीतम्, (352) जीवग, (353) जीवचर्तुभेदादि बत्तीसी, (354) जीवजी, (355) जीवण, (356) जीवण (दासी) , (357) जीवणजी, (358) जीवणजी - २ , (359) जीवणजी(मुनि), (360) जीवणदास, (361) जीवणदास - २ , (362) जीवणदास - ३ , (363) जीवणदास - ४, (364) जीवणराम, (365) जीवणराम - १ , (366) जीवणविजय, (367) जीवणविजय(गणि), (368) जीवणसाहेब, (369) जीवणियो, (370) जीवत, (371) जीवत स्वामी रास, (372) जीवत स्वामीनो रास , (373) जीवतस्वामीनो रास , (374) जीवतां, (375) जीवत् प्रतिमा, (376) जीवत्व, (377) जीवत्व सिद्धि , (378) जीवत्वसिद्धि , (379) जीवत्स्वामिन्, (380) जीवदया, (381) जीवदया कुल सझाय, (382) जीवदया रास, (383) जीवदयागीत, (384) जीवदयाचौपाइ, (385) जीवदयानिमित्ते आहारकशरीरनी रचना केवी रीते ?, लेखक - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय, (386) जीवदयारास, (387) जीवदिषट्क का अल्पबहुत्व , (388) जीवदृष्टिजा क्रिया, (389) जीवद्यशा, (390) जीवधन, (391) जीवधर चरित, (392) जीवन, (393) जीवन - २, (394) जीवन विनाशी रोग होने पर भी औषधादि के संग्रह का निषेध , (395) जीवनमुक्त:, (396) जीवनम्, (397) जीवनिकाय, (398) जीवनिश्रित और अजीवनिश्रित स्वर , (399) जीवनिश्रित स्वर सात है--, (400) जीवनैसृष्टिकी, (401) जीवनैसृष्टिकी क्रिया, (402) जीवन्ती, (403) जीवन्धचरित, (404) जीवन्मुक्ति:, (405) जीवन्मुक्त्यधिकारी, (406) जीवपारिग्रहिकी क्रिया, (407) जीवप्रतिबोध गीतम्, (408) जीवप्रतिबोध सज्झाय, (409) जीवप्रबोध प्रकरण, (410) जीवप्रबोधप्रकरण, (411) जीवप्रयोगकरण, (412) जीवप्रयोगकरण : शरीरकरण , (413) जीवप्रयोगकरण : संघातपरिशाटकरण , (414) जीवप्रातीत्यिकी क्रिया # #ह%ू #.. #हू, (415) जीवप्रादेशिक, (416) जीवप्रादेशिकवाद, (417) जीवप्रादोषिकी, (418) जीवप्रादोषिकी क्रिया, (419) जीवबन्ध, (420) जीवभवस्थिति रास, (421) जीवभवस्थिति-सिद्धान्तसार-प्रवचनसाररास, (422) जीवभवस्थितिरास, (423) जीवभाव, (424) जीवमंगल, (425) जीवमध्यप्रदेश, (426) जीवयमई, (427) जीवयशा, (428) जीवरक्षा, (429) जीवरखी, (430) जीवराज, (431) जीवराज - १, (432) जीवराज - २, (433) जीवराज - ३ , (434) जीवराज - ४, (435) जीवराज ऋषि, (436) जीवराज जी (आचार्य), (437) जीवराजशेठनी मुसाफरी, (438) जीवराम, (439) जीवराम

अजरामर गौर, (440) जीवरुचि, (441) जीवविंचारस्तवन, (442) जीवविचय, (443) जीवविचार, (444) जीवविचार , त्रिषष्टि सलाका स्तवन, (445) जीवविचार टबो , (446) जीवविचार टव्वा, (447) जीवविचार टव्वो। , (448) जीवविचार प्रकरण, (449) जीवविचार बाला. , (450) जीवविचार बालावबोध , (451) जीवविचार बालावबोध, नवतत्त्व बालावबोध, दंडक बालावबोध, (452) जीवविचार भाषा , (453) जीवविचार भाषा गभित स्तवन , (454) जीवविचार भाषा दोहा। , (455) जीवविचार रास , (456) जीवविचार वृत्ति। , (457) जीवविचार स्तबक, (458) जीवविचार स्तवन , (459) जीवविचार स्तवन भाषा , (460) जीवविचार, विचारषट्त्रिंशिका, नवतत्त्व बालावबोध , (461) जीवविचार,क्षेत्रसमास,रत्नाकर पंचविंशिका दंडक बालावबोध , (462) जीवविचारग्रंथ बालावबोध , (463) जीवविजय, (464) जीवविजय - २, (465) जीवविजय - ३ , (466) जीवविपाकिनी, (467) जीवविप्रमुक्त, (468) जीवविषया द्रशिक्रिया, (469) जीववैदारणिका क्रिया, (470) जीवसंख्या, (471) जीवसमास, (472) जीवसमास - सवृत्ति (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - जैन ग्रंथ प्रकाशन समिति, शुद्धिकार - कुमुदचन्द्र-गोयमचन्द्रविजय, (473) जीवसागर, (474) जीवसामन्तोपनिपातिकी क्रिया, (475) जीवसिद्धि, (476) जीवसुन्दर, (477) जीवस्थान, (478) जीवस्पर्शनक्रिया, (479) जीवस्पृष्टिजा क्रिया, (480) जीवस्वरूप चोपाई , (481) जीवस्वरूप चौपइ, (482) जीवस्वाहस्तिकी क्रिया, (483) जीवहिंसा, (484) जीवा, (485) जीवा(ऋषि) , (486) जीवांतक, (487) जीवाजी, (488) जीवाजी(ऋषि) , (489) जीवाजीव का अल्पबहुत्व, (490) जीवाजीवविभक्ति, (491) जीवाजीवविभत्ति, (492) जीवाजीवविषयबन्ध, (493) जीवाजीवाः, (494) जीवाजीवाभिगम, (495) जीवाज्ञापनिका क्रिया, (496) जीवात्मगतगुणाः, (497) जीवात्मनो योग्यविशेषगुणाः, (498) जीवात्मा, (499) जीवादत्त, (500) जीवाधिकरण, (501) जीवाधिगमोपाय, (502) जीवानंद वैद्य, (503) जीवानुभाग, (504) जीवानुशास्तिसधि, (505) जीवापोता, (506) जीवाप्रत्याख्यानक्रिया, (507) जीवाभिगम, (508) जीवाभिगम सूत्र बालावबोध, (509) जीवाभिगम सूत्र बालावबोध, धन्य चरित्र बालावबोध, (510) जीवाभिगमसुत्र, षडावश्यक, लघु संग्रहणी बालावबोध , (511) जीवाभिगमसूत्र बालावबोध , (512) जीवाभिगमसूत्र बालावबोध , (513) जीवारम्भिकी क्रिया, (514) जीवारे, (515) जीवाशाह, (516) जीवाश्रयाप्रमा, (517) जीवास्तिकाय, (518) जीवास्तिकाय का अर्थ , (519) जीविअमई, (520) जीविका, (521) जीविका दोष, (522) जीवित, (523) जीवित आशंसा, (524) जीवित आशंसा अतिचार, (525) जीविताशंसा, (526) जीविताशंसाप्रयोग, (527) जीवित्व, (528) जीविय, (529) जीवी, (530) जीवीदान, (531) जीवू, (532) जीवो, (533) जीवो - १ , (534) जीवो - २ , (535) जीवो - ३ , (536) जीवो जीवणदास, (537) जीवों का परस्पर उपकार, (538) जीवों का विभक्तिभाव परिणमन के हेतु का प्ररूपण, (539) जीवों की अनंतता , (540) जीवों की उत्कृष्ट कायस्थिति (कोष्टक), (541) जीवों के आहार तथा श्वासोश्वास का कालमान, (542) जीवों के काय की विवक्षा से भेद , (543) जीवों द्वारा द्विस्थानिकादि निर्वर्तित पुद्गलों का पापकर्म के रूप में चयादि का प्ररूपण, (544) जीवों में आदिमान परिणाम, (545) जीवों में कायिकी आदि क्रियाओं के स्पृष्टास्पृष्टभाव का प्ररूपण, (546) जीवों में ग्यारह स्थानों द्वारा क्रियावादी आदि समवसरणों का प्ररूपण, (547) जीवों में ग्यारह स्थानों द्वारा पापकर्म बंध के भंग, (548) जीवों में सक्रियत्व-अक्रियत्व का प्ररूपण, (549) जीवोदय-निष्पन्न , (550) जीवोदयनिष्पन्न, (551) जीवोना 563 भेदोनी जुदा जुदा स्थले थती उत्पत्ति , (552) जेगजीवन, (553) जेगजीवन (गणि), (554) ज्ञानावरणीय आदि का बंध करते हुए जीव-चौबीसदंडकों में कर्म वेदन का प्ररूपण, (555) ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम सब जीवों में , (556) ज्ञायकशरीरभावीजीव, (557) णिज्जीवय, (558) णीलबंधुजीव, (559) तदुभयप्रत्ययिक-अजीवभावबन्ध, (560) तदुभयप्रत्ययिक-जीवभावबन्ध, (561) तब्भवजीवियं, (562) तब्भवजीवो, (563) ताल तमाल आदि के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (564) तिर्यंच संज्ञा वाले जीव, (565) तिर्यक् जीव, (566) तिष्यगुप्त और जीवप्रादेशिकवाद , (567) तुम्ब के दृष्टांत से जीवों के गुरुत्व-लघुत्व के कारणों का प्ररूपण, (568) तुलसी आदि के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (569) तेजजीव, (570) तेजस्कायिक जीवों का आरम्भ न करने की प्रतिज्ञा , (571) तेजस्कायिक जीवों की हिंसा का निषेध , (572) तैजसजीवः, (573) त्रस (त्रस जीव), (574) त्रस जीव, (575) त्रसजीव, (576) त्रसनाडीनी बहार त्रस जीवोनुं गमनागमन केम नही ?, जिज्ञासा - राजहेमविजय, (577) त्रसनाडीनी बहार त्रस जीवोनुं गमनागमन केम नही ?, समाधान - श्रमणोदय-कल्पसूत्रविजयजी, (578) त्रिन्द्रिय जीव, (579) त्रीन्द्रिय जीव, (580) त्रीन्द्रिय जीवों के स्थान, (581) त्रीन्द्रिय जीवों में आठ कर्मप्रकृतियों की स्थिति बंध का प्ररूपण, (582) थीणद्धि निद्राना उदयवाळा जीवने पण केवलज्ञान थई शके !!!, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय, (583) दंडक स्तवन ,जीवविचार स्तवन , (584) दिशाओं में जीव, अजीव और उनके देश, प्रदेश, (585) दीप्तजिव्हा, (586) देवना अने नरकना जीवोने आयुष्यनी उदीरणा, जिज्ञासा - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय, (587) देशविरत जीवस्थान, (588) द्रव्यजीव, (589) द्रव्याजीव, (590) द्रव्याजीवः, (591) द्वीन्द्रिय जीव, (592) द्वीन्द्रिय जीवों के आठ कर्मप्रकृतियों की स्थिति बंध का प्ररूपण, (593) द्वीन्द्रिय जीवों के स्थान, (594) द्वीपसमुद्रों में सर्वजीवों के पूर्वोपन्नत्व का प्ररूपण, (595) धम्मजीवी, (596) धातकीखण्डद्वीप और कालोदसमुद्र के जीवों की उत्पत्ति का प्ररुपण, (597) नरक का आयुष्य कैसे जीव बांधते है ?, (598) नरक पृथ्वियों में सर्वजीवों का पृथ्वी-कायिकत्वादि के पूर्वोत्पन्नत्व का प्ररूपण, (599) नरक में एक साथ उत्पन्न होने वाले जीवों की संख्या, (600) नरक में एक साथ मरने वाले जीवों की संख्या, (601) नरक में कौन से जीव उत्पन्न होते है ?, (602) नरक से आया हुआ जीव कौन सी लब्धि प्राप्त कर सकता है ?, (603) नरक से निकले हुए जीव कितनी लब्धि , (604) नरकावासों के पार्श्ववासी पृथ्वीकायिकादि जीवों के महाकर्मतरादि का प्ररूपण, (605) नाना प्रकार के तापसों का वर्णक और सोमिल का दिशा प्रोक्षिक-तापस जीवन, (606) नामजीव, (607) नामाजीव, (608) नामाजीवः, (609) नारक जीवों का अवधिज्ञान , (610) नारक जीवों की आयुस्थिति , (611) निगोद जीव, (612)

निगोदजीव, (613) निगोयजीवा, (614) निज्जीवं, (615) निमित्ताजीवयाते, (616) नियोजिवुं, (617) निरनुबंध कर्मोना बंध वखते जीवमां भावो, जिज्ञासा - कुमुदचन्द्रविजय, (618) निरनुबंध कर्मोना बंध वखते जीवमां भावो, पत्रचर्चा - त्रैलोक्यमंडनविजय, (619) निरनुबंध कर्मोना बंध वखते जीवमां भावो, पत्रचर्चा - संस्कारयशविजय, (620) निरनुबंध कर्मोना बंध वखते जीवमां भावो, समाधान - त्रैलोक्यमंडनविजय, (621) निरनुबंध कर्मोना बंध वखते जीवमां भावो, समाधान - संस्कारयशविजय, (622) निर्ग्रन्थता एक जीव को 5 बार प्राप्त होती है, (623) निवृत्तिबादर जीवस्थान, (624) निश्यजिव्ह, (625) नीम आम आदि के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (626) नील बंधुजीव, (627) नीलबंधुजीव, (628) नैरयिक जीवों की अवगाहना , (629) नो-जीव, (630) नोआगमभावजीव, (631) नोकर्म जीवद्रव्यलेश्या : आभामंडल , (632) नोजिवा, (633) पंचेन्द्रिय जीवों के स्थान, (634) पंचेन्द्रिय जीवों केअघातक दस प्रकार का संयम करते है , (635) पजीवण, (636) पडिबुद्धजीवी, (637) पणगजीव, (638) पण्याजीव, (639) पद(जिवणसाहेब), (640) परमभावजीव, (641) परम्परोपपन्नकादि एकेन्द्रिय जीवों में कर्मप्रकृतियों के स्वामित्व, बंध और वेदन का प्ररूपण, (642) परीतकाय जीव, (643) परीतजीव, (644) पसंतजीवी, (645) पाँच दुर्लभबोधि जीव , (646) पाँच सुलभबोधि जीव , (647) पाँच या आठ गतियों की अपेक्षा जीवों का अल्पबहुत्व, (648) पाठादि के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (649) पाप स्थान विरत जीव-चौबीसदंडकों में कर्म-प्रकृति बंध, (650) पाप स्थानों से जीवों की गुरुता , (651) पापस्थानों से विरत जीवों में आरंभिकी आदि क्रिया भेदों का प्ररूपण, (652) पार्श्वनाथ चरित्र ,जीवविचार बालावबोध , (653) पावजीवी, (654) पावाजीवी, (655) पीतबन्धुजीव, (656) पीयबंधुजीव, (657) पुत्तंजीव, (658) पुत्तंजीवय, (659) पुत्रञ्जीवक, (660) पुद्-गल ( अजीव ) ना 530 भेद , (661) पुरुष अश्व हस्ति आदि कों मारते हुए अन्य जीवों के भी हनन का प्ररूपण, (662) पूजिवा, (663) पूसफलिका आदि वल्लियों के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (664) पृथिवीजीव, (665) पृथ्वियों के चरमान्तों में जीव, अजीव और उनके देश-प्रदेश, (666) पृथ्वीकायिक जीवों की वेदना जानकर उनके आरम्भ का निषेध किया है , (667) पृथ्वीकायिक जीवों के स्थान, (668) पृथ्वीकायिकादि जीवों की हिंसा के कारण, (669) पोतज जीव, (670) प्रतिजीवी, (671) प्रतिबुद्धजीवी, (672) प्रतिबुद्धिजीवी, (673) प्रत्युत्पन्न षट्कायिक जीवों के निर्लेपन काल का प्ररूपण, (674) प्रत्येक जीव, (675) प्रत्येक जीव के प्रदेश का परिणाम, (676) प्रत्येकजीव, (677) प्रथम तज्जीव तत्शरीरवादी की श्रद्धा का निरसन , (678) प्रभु वीर जीवन मतांतर, पत्रचर्चा - सौम्यप्रभविजय, (679) प्रभु वीर जीवन मतांतर, लेखक - हेमहर्षविजय, (680) प्रमत्तसंयत जीवस्थान, (681) प्राण, भूत, जीव अने सत्त्वनी व्याख्या, लेखक - हेमनिलयविजय, (682) प्राणजीवन, (683) प्राणातिपात से बाल जीवों का पुनः पुनः जन्म मरण , (684) बंधुजीवक, (685) बंधुजीवग, (686) बंधुजीवग गुम्म, (687) बंधुजीवगगुम्मा, (688) बंधुजीवगवण, (689) बन्धुजीवक, (690) बन्धुजीवक गुल्म, (691) बाँस वेणु आदि के मूल कंदादि जीवों के उत्पातादि का प्ररूपण, (692) बादर जीव, (693) बादर तेजस्कायिक जीवों के स्थान, (694) बाल जीवो के दुःखानुभव के हेतु , (695) बालजीव क्रूर कर्म करते है , (696) बैगन आदि गुच्छों के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (697) भ. महावीर की जीवनचर्या के सम्बन्ध में गोशालक का आक्षेप, (698) भगवंत प्ररूपित लोक और जीवों का शास्वतपन तथा अशास्वतपन, (699) भगवान ने छह जीवनिकाय प्ररूपित किये है , (700) भरत और ऐरवत की जीवा का प्रमाण, (701) भवजीव, (702) भवजीवय, (703) भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीवों के भेद-प्रभेदों का प्ररुपण, (704) भांजिवुं, (705) भाटकजीविका, (706) भाव जीव, (707) भावजीव, (708) भावपृथिवी जीव, (709) भावबंध : जीवभावप्रयोगबंध , (710) भावाजीव, (711) भावाजीवः, (712) भाविनोआगमद्रव्यजीव, (713) भावी चौबीसी के जीव, (714) भिन्न काल की अपेक्षा से एक ही जीव की अवगाहना भी अलग-अलग, (715) भुजपरिसर्प जीवों का वर्ग, (716) भुवनदीपक बालावबोध, दशवैकालिक स्तबक, जीवविचार बालावबोध , (717) मंडली उपजीवी , (718) मंदिर के द्रव्य से अपना जीवननिर्वाह करता हो तो क्या वह सुपात्रदान कर सकता है ?, जिज्ञासा - तत्त्वेशचन्द्रविजय, (719) मंदिर के द्रव्य से अपना जीवननिर्वाह करता हो तो क्या वह सुपात्रदान कर सकता है ?, समाधान - राजहेमविजय, (720) मण्डली-उपजीवी, (721) मतिजीवी, (722) मतिज्ञान से शून्य जीव , (723) मनुष्यभाविजीव, (724) मन्त्रोपजीवन, (725) मरजीव, (726) मरजीवय, (727) महावीर का धर्मोपदेश : जीवनिकाय निरूपण , (728) माता-पिता ने कहा-श्रमण जीवन में चिकित्सा निषिद्ध है, (729) माता-पिता ने श्रमण जीवन दुष्कर कहा और प्रव्रज्या लेने से रोका, (730) मानव के अयोग्य जीव, (731) माषपर्णी आदि के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (732) मिथ्यात्वी जीव को कौन-सा कायवध, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय, (733) मुक्त जीव, (734) मुधाजीवी, (735) मृगापुत्र ने नरक के दुखों का वर्णन किया और श्रमण जीवन की दुष्करता का निराकरण किया, (736) मृतसंजीवनी, (737) मोहनीय कर्म के वेदक जीव के कर्म बंध का प्ररूपण, (738) यावज्जीविक अनशन, (739) योग्यता ( जीवस्य ), (740) रक्तबन्धुजीव, (741) रत्तबंधुजीव, (742) राजीव, (743) राजीवलोचन, (744) राजीवसरसी, (745) लब्धि और भव्य जीव , (746) लब्ध्यक्षर और संज्ञी-असंज्ञी जीव , (747) लवणसमुद्र और धातकीखण्डद्वीप के जीवों की उत्पत्ति का प्ररुपण, (748) लवणसमुद्र के जीवों की जम्बूद्वीप में उत्पत्ति, (749) लाजिवा, (750) लेश्या के अनुसार जीवों में ज्ञान के भेद, (751) लेश्यादि बारह द्वारों का पंचेन्द्रिय जीवों में प्ररूपण, (752) लेश्यादि बारह द्वारों का विकलेन्द्रिय जीवों में प्ररूपण, (753) लेश्यायुक्त चौबीसदण्डकों में जीवों का सामान्यत : उत्पाद-उद्वर्तन, (754) लोक और जीव के विषय में गौतम के प्रश्न करने पर जमाली का चुप रहना, (755) लोक के एक आकाश-प्रदेश में जीवों और जीव-प्रदेशों का अल्प-बहुत्व, (756) लोक के चरमान्तों में जीवाजीव और उनके देश-प्रदेश, (757) लोक में एक आकाश प्रदेश में जीव-अजीव और देश-प्रदेश, (758) लोक में जीव अजीव और उनके देश-प्रदेश, (759) लोही आदि के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (760) वनजीविका, (761) वनस्पति आदि की सजीवता , (762)

वनस्पतिकायिक जीवों का आरम्भ न करने की प्रतिज्ञा , (763) वनस्पतिकायिक जीवों की हिंसा का निषेध , (764) वनस्पतिजीव, (765) वरजीवनदास, (766) वर्धमान अवधि (परमावधि) का उत्कृष्ट क्षेत्र : अग्नि जीवों का दृष्टांत , (767) वस्त्र में पुद्गलोपचय के दृष्टान्त द्वारा जीव-चौबीसदंडकों में कर्मोपचय का प्ररूपण, (768) वाग्जीवी, (769) वायुकायिक जीवों का आरम्भ न करने की प्रतिज्ञा , (770) वायुकायिक जीवों की हिंसा का निषेध , (771) वायुजीव, (772) विकलेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवों का अल्पबहुत्व, (773) विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध, (774) विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध, (775) विरति स्थानो से जीवों की लघुता , (776) विविक्त जीवी, (777) विविध दृष्टांतों द्वारा महावेदना और महानिर्जरा युक्त जीवों का प्ररूपण, (778) विविध भाव परिणत जीव का एकभावादि रूप परिणमन, (779) विश्र्वजीव:, (780) वेलुजीवीराम, (781) वैमानिक देवों में जीवों का अनन्त बार पूर्वोत्पन्नत्व का प्ररूपण, (782) व्यवहारजीवस्वरूप, (783) शकटजीविका, (784) शय्यातर के उपजीवी ज्ञातिजन निमित्तक आहार के ग्रहण का विधि-निषेध , (785) शाली-व्रीहि आदि के कंद-स्कंध-त्वचा-शाखा-प्रवाल-पत्र-पुष्प-फल-बीज के जीवों के उत्पातादि का प्ररूपण, (786) शाली-व्रीहि आदि के मूल जीवों का उत्पातादि बत्तीस द्वारों से प्ररूपण , (787) शुक्र देवलोक से च्यवन के अनन्तर सोमिल के जीव की सिद्ध गति का प्ररुपण, (788) शुद्धोञ्छजीवनम्, (789) श्रजीवप्रादोषिकी क्रिया -, (790) श्वेत बन्धुजीव, (791) षट् जीव निकाय, (792) षड जीवनिकाय - हिंसाकरण प्रायश्चित्त, (793) षड् जीवनिकाय का स्वरुप एवं हिंसा का निषेध , (794) षड्जीवकासंयम, (795) षड्जीवनिका, (796) षड्जीवनिकाय, (797) संख्यात-असंख्यात और अन्नत जीव वाले वृक्षों के भेदों का प्ररूपण, (798) संख्येयजीवी, (799) संयमी की जीवन-शैली , (800) संसार समापन्नक जीवों की गति-आगति का प्ररूपण, (801) संसारस्थ जीव, (802) संसारी जीव, (803) संसारी जीव की गति ऊर्ध्व, अधो और तिच्छीं तीनों क्यों होती है ?, (804) संसारी जीव के प्रकार , (805) संसारी जीवों की गति, (806) सकषाय-अकषाय जीवों का अल्पबहुत्व, (807) सकषाय-अकषाय जीवों की कायस्थिति, (808) सकषाय-अकषाय जीवों के अन्तर काल का प्ररूपण, (809) सजीव, (810) सतत कितने समय तक कितने जीव सिद्ध होते हैं ?, (811) सभी एकान्त बाल जीव ममत्व युक्त होते है , (812) सभी जीव एकेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय , (813) सभी जीव समान पुद्गल ग्रहण करते हैं या न्यून-अधिक ?, (814) सभी तीर्थकरों ने सभी प्राण भूत जीव सत्वों की रक्षा करनी चाहिए ऐसी प्ररूपणा की है , (815) सभी बाल जीव आसक्त है, सभी पण्डित अनासक्त है , (816) समवसरणमां देशनाश्रवण करवा जलचर जीवो, जिज्ञासा - शीलचन्द्रविजय, (817) समवसरणमां देशनाश्रवण करवा जलचर जीवो, समाधान - राजहेमविजय, (818) समवायांग स्तबक,जीवविचार बालावबोध, गुणस्थान विचार, (819) सम्यग्दर्शनयोग्यजीव:, (820) सर्व जीवों के सुख-दु:ख को अणुमात्र भी दिखाने में असामर्थ्य का प्ररूपण, (821) सर्वकर्मक्षय होने पर जीव की ऊर्ध्वगति के 4 हेतु, (822) सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वसुखावह, (823) सर्वाधिक मनुष्य और सर्वबहु अग्निजीव , (824) सलेश्य जीव-चौबीसदंडकों में ऋद्धि का अल्पबहुत्व, (825) सलेश्य जीवों के परभव गमन का प्ररूपण, (826) सलेश्य-अलेश्य जीवों का अल्पबहुत्व, (827) सलेश्य-अलेश्य जीवों की कायस्थिति , (828) सलेश्य-अलेश्य जीवों के अन्तरकाल का प्ररूपण, (829) सलेश्य-अलेश्य जीवों के आरंभादि का प्ररूपण, (830) सवेदक-अवेदक जीवों का अल्पबहुत्व, (831) सवेदक-अवेदक जीवों की कायस्थिति, (832) सवेदक-अवेदक जीवों के अंतरकाल का प्ररूपण, (833) सव्वपाणभूअजीवसत्तसुहावह, (834) सांव्यवहारिक जीव, (835) सादि-अनादि विस्त्रसाकरण, अजीवभावकरण , (836) साधारण जीव, (837) साधु के जीवन में भाषा विवेक , (838) सामान्य जीव और चौबीसदंडकों में पाप क्रियाओं का विरमण प्ररूपण, (839) सास्वादन सम्यग्दृष्टि जीवस्थान, (840) सिद्ध के जीवां की अवगाहना पूर्व शरीर से दो-तृतीयांश क्यों ?, (841) सिद्ध जीव, (842) सिद्ध जीवों की गति, (843) सिद्ध जीवों संबंधी विशेष विचारणा, (844) सिरियकादि गुल्मों के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (845) सु जीवी, (846) सुकुमालिका ने गणिका के भोगमय. जीवन को देखकर नियाणा किया, (847) सुक्ष्म जीवोने पण शस्त्र लागे !, पत्रचर्चा - शीलचन्द्र-निर्ग्रन्थचन्द्रविजय, (848) सुक्ष्म जीवोने पण शस्त्र लागे !, लेखक - परमयशविजय, (849) सुजीवी, (850) सूक्ष्म जीव, (851) सूक्ष्म जीवों के आठ प्रकार , (852) सूक्ष्म जीवों के प्रकार , (853) सूक्ष्म संपराय जीव स्थान में बँधने वाली कर्मप्रकृतियाँ, (854) सूक्ष्मजीवोनी विराधना, जिज्ञासा - ज्ञानरुचिविजय, (855) सूक्ष्मजीवोनी विराधना, जिज्ञासा - समाधान - शीलचन्द्रविजय, (856) सूक्ष्मसम्पराय जीवस्थान, (857) सूर्याभदेव के भव के बाद प्रदेशी राजा को जीव दृढ़प्रतिज्ञ के भव में मोक्ष गमन का निरूपण, (858) सेडिय भंतियादि के मूल कंदादि जीवों में उत्पातादि का प्ररूपण, (859) सेय बंधुजीव, (860) स्थलचर जीवों का वर्ग, (861) स्थानांग के अनुसार चातुर्गतिक जीवों की गति-आगति का प्ररूपण, (862) स्थापनाकुलोपजीवी, (863) स्थापनाजीव, (864) स्थापनाजीव:, (865) स्थावर जीव, (866) स्थावरकायिक जीवों का परस्पर अवगाढ़त्व का प्ररूपण, (867) स्थावरजीवों के शस्त्र , (868) स्फोटजीविका, (869) हरजीवन, (870) हरजीवन - २, (871) हरजीवन(माहेश्वर), (872) हाथी और कुंथुए के जीव को समान अप्रत्याख्यान क्रिया का प्ररूपण